व्याख्यान - 6

स्नातक तृतीय खंड

मैथिली कथा साहित्यक विकास आ काँचीनाथ झा 'किरण'

मैथिली साहित्यमे परिवर्तनवादी कथाकारक रूपमे काँचीनाथ झा 'किरण'क नाम लेल जाइत अछि। मैथिली कथा साहित्यक विकासमे किरण जीक कथा एकटा क्रांतिकारी डेग मानल जाइत अछि। हिनक एकमात्र कथा संग्रह 'कथा किरण' भेटैत अछि, जाहिमे 11 गोट कथाक संकलन थिक। हिनक 'धर्मरत्नाकर' आ 'मधुरमनि' कथा मैथिलीक श्रेष्ठ कथाक रूपमे चर्चित अछि। जमीन्दारी प्रथाक विरोधमे लिखल हिनक 'धर्मरत्नाकर' एकटा क्रांतिकारी कथाक रूपमे जानल जाइत अछि। एहि कथाक प्रसंग मोहन भारद्वाज लिखैत छथि – "धर्मरत्नाकर एहि स्थितिक कलात्मक अभिव्यक्ति थिक। जमीन्दारी शोषणक विरुद्ध उदाहरण दैत ई कथा कहैत अछि जे व्यभिचार आ मान-मर्यादा अर्थक देन थिक। अर्थपरक सामाजिक व्यवस्थामे पद आ प्रतिष्ठा कोना कीनल जाइत अछि समाजक संतानदार पण्डित लोकनि कोना क्रीतदास बनि जाइत छथि तकरा ई कथा बहुत फरिच्छा कऽ रखैत अछि"।

तहिना निम्न मध्यवर्गीय

(२)

परिवारक जीवन निर्वहन समस्याक मध्य आकर आत्म स्वाभिमानक कथा किरण जी 'मधुरमनि' मे कहलनि। एहि कथामे परस्पर दाम्पत्य प्रेमक प्रस्फुटन सहजताक संग देखल जा सकैत अछि। एहि कथाक प्रसंग जयधारी सिंह कहैत छथि — "एहि वातावरण कथाकार धीरे धीरे भरि रहल अछि जे प्रति दिन हमरा समक्ष यथार्थ रूपमे अनुभूत होइत अछि। दू प्राणी, निर्वाहक समस्या आ कुनू तेरिह, निर्दोष घमंड, जकरा 'innocent vanity' अंग्रेजीमे कहल जाइत अछि, एहि घमंडमे एक-दोसर सँ झगड़ैत आ अन्तमे स्वामीक विवशता, जीविकाक हेतु एकमात्र हेतु सोचु, किन्तु रूसल आंकरा, कतौ चलि सकैक? 'मधुरमनि' अपना 'हिरिस धीरिय लेल हुँकरा' कथाक नायिकाक आकर्षक जाहि प्रकारे किरण जी प्रस्फुटित कयलनि अछि तकरा सँ निम्नमध्यवर्गीय परिवारक आत्मसम्मानक पालगैत अछि।

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार